भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
IIT INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : pro.ppc@itbhu.ac.in

कुलसचिव कार्यालय
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)

दैनिक जागरण

Office of the Registrar
(Press & Publicity Cell)

दिनांक : 14.02.2019

आइआइटी के पूर्व छात्र ने लिया ठान, असि नदी में डाल रहे जान

असि नदी की सफाई करते कामगार ● जागरण

जागरण संवाददाता, वाराणसी : वरुणा एवं असि नदी से वाराणसी को जाना जाता है। मगर, बेतहाशा अतिक्रमण व गंदगी के कारण असि का अस्तित्व ही संकट में है। हालांकि जज्बा या जुनून हो तो भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ी इस नदी को भी जीवन मिल सकता है। अशर्ते यह काम ईमानदारी व बिना किसी स्वार्थ के हो, जिसे पूरा करने का बीड़ा उठाया है भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के पुरातन छात्र सुनील खन्ना ने। उन्होंने ठान लिया है कि वह असि नदी में जान देंगे। अपने दम पर इसको लेकर काम भी शुरू कर दिया है। वह भी बिना बिजली, उपकरण या किसी केमिकल के उपयोग के।

सुनील बताते हैं कि वह 2017 में आइआइटी के समारोह में आए थे, जहां पर उनको अवार्ड मिला। इसी दौरान उन्होंने बनारस के लिए कुछ करने की ठान ली।

आइआइटी, बीएचयू के पूर्व छात्र सुनील खन्ना

प्रधानमंत्री के स्वच्छ गंगा परियोजना से प्रेरित होकर गंगा को स्वच्छ बनाने की पहल की। सुनील कहते हैं कि गंगा को स्वच्छ रखने के लिए असि को भी दुरूस्त करना होगा। इस सोच को अमलीजामा पहनाने के लिए वर्ष 2018 के जनवरी में डीपीआर बनवाया गया। डीपीआर बनाने वाली कंपनी ने असि नदी को साफ करने में करीब चार करोड़ अनुमानित लागत प्रस्ताव शामिल किया। सरकार से इसके लिए धन नहीं

नजीर

- सुंदरपुर से रविदास पार्क तक लगाए गए हैं छह ग्रीन ब्रिज
- 1976 बैच के छात्र सुनील को केंद्रीय मंत्री मनोज सिन्हा ने किया था सम्मानित

सिर्फ अनुमति मांगी गई। सरकार ने जुलाई में सरकार की ओर से भी हरी झंडी मिल गई। कारण कि कंपनी को इस काम के लिए सरकार से राशि की जरूरत नहीं थी।

बिना किसी केमिकल या बिजली के अभियान : 1976 बैच के छात्र रहे सुनील खन्ना मुंबई में एक कंपनी के प्रेसिडेंट एंड मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। कंपनी की तरफ से सबसे पहले असि का सर्वे कराया तो पता चला कि पानी पूरी तरह काला था। इसमें ऑक्सीजन भी नहीं था, जिसके कारण मछली या कोई अन्य जंतु भी नहीं रह पाते थे। फिर सुंदरपुर से रविदास पार्क तक छह ग्रीन ब्रिज यानी जाली लगवाए, जिससे कचरे को रोकने व एकत्रित करने में सहूलियत मिलती है। साथ ही पत्थर के पुल भी बनाए गए हैं। बताया कि असि में स्वच्छता अभियान बिना किसी केमिकल, सीमेंट, बिना बिजली के ही चला रहे हैं। जेसीबी मशीन या आसपास के कामगारों से कचरा निकालने का काम किया जा रहा है।

नदी में आ गई जान : सुनील का दावा है कि सफाई के बाद पानी में आक्सीजन का स्तर बढ़ने के साथ घातक केमिकल में कमी आई है। खास यह कि सारा काम कंपनी की देखरेख में ही हो रहा है। इस काम के लिए 11 फरवरी को रेल राज्यमंत्री मनोज सिन्हा ने सुनील को सम्मानित भी किया।